सम्पादक की कलम से

आज हर भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने के कारण हर बेईमान व भ्रष्टाचारी जब अपने द्वारा किये जा रहे कृत्यों पर पर्दा डालने की कोशिश में लगे रहते है और हर ईमानदार व्यक्ति को जो इनके कृत्यों को सार्वजनिक करता है या उसका विरोध करता है उसकी जी खोलकर आलोचना करते है. मेरे साथ भी यही होता है लेकिन मैं अविचलित भाव से अपने काम में जुटा रहता हूं. मेरे एक मित्र ने कहा कि आपके विरोधी लोग आपके खिलाफ चाहे जैसी उल-जुलूल बाते करते है उनकी बातों का प्रत्युत्तर आपको भी देना चाहिये. मेने अपने मित्र से सिर्फ इतना ही कहा कि मित्र यदि मैं अपनी आलोचनाओं पर ध्यान दूं और उनका उत्तर देने लगूं तो दिन भर केवल इसी काम को कर पाउंगा और इसके चलते कोई अन्य कार्य हो नहीं सकेगा. मेरा तो एक ही उद्देष्य है कि अपनी सारी योग्यता और शक्ति का उपयोग करते हुए पूर्ण ईमानदारी से अपना पूरा काम करना. और मैं वह कता हूं और इस कार्य को मैं अपने अंतिम समय तक करता भी रहूँगा. यदि मैं अंत में बुरा सिद्ध होता हूं तो मैं भले ही लाख सफाई देता रहूं, मैं सही हूं, मेरा रास्ता सही था- कोई इस बात को न सुनेगा और यदि मैं अंत में भला सिद्ध होता हूं तो मेरे विषय में जो प्रलाप किया जा रहा है, वह निश्चित रूप से अनर्गल सिद्ध होगा. और यही बात एक कटु सत्य है कि मुझे अपने विरोधीयों की ऐसी आलोचनाओं की न तो चिंता है और न ही भय. दरअसल आम आदमी इतना स्वार्थी हो गया है कि उसे अपने अलावा किसी और के बारे में सोचना का वक्त ही नहीं और और इसी आदत के कारण वह अपना नैतिक पतन करता ही जा रहा है और इसका परिणाम सारे देश को भुगतना पड़ रहा है. हर कोई अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहता है. एक सार्वजनिक स्थान पर जब मैंने कुछ लोगों को भ्रष्टाचार का विरोध करने वाले सत्येन्द्र दुबे और मंजूनाथन के द्वारा भ्रष्टाचार विरोधी गतिविधियों पर उनकी सरेराह मृत्यु पर कहाँ गया कि वे बेवकुफ थे उन्हें क्या पड़ी थी भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने की. उनकी इसी बात पर मुझे इतना दुख पहुँचा मैं सोचने लगा कि आदमी कीतना स्वार्थी हो गया है. मुझे ऐसा लगा कि यदि महात्मा गांधी और उनके साथी देशभक्त अन्य लोग यदि भारत की आजादी की लड़ाई नहीं लड़ते तो आज भारत भी एक गुलाम मुल्क की भांति रहता. दरअसल होता यह है कि हर आदमी अपने सामर्थ्य के हिसाब से ही कार्य करता है. यदि कुत्ते को एक हड्डी मिल जाये तो वह अपने आप को धन्य समझता है उसे कोने में ले जाकर उसका मजा लेता है और अपने आप को धन्य समझता है और शेर हाथ आये गिदड़ को छोड़कर हाथी को मारना पसंद करता है.

व्यक्त

हमारा जीवन चलता है अभिव्यक्ति के आधार पर। जीवन के सारे क्रिया-कलापों का आधार अभिव्यक्ति ही है। चाहे शब्दों से हो, संकेतों से हो या फिर लेन-देन से। अभिव्यक्ति का अर्थ है व्यक्ति के चारों ओर पूर्ण रूप से। व्यक्त करने को व्यक्ति कहते हैं। व्यक्त करने पर ही विषय ही अभिव्यक्त होता है। हम व्यक्ति को केवल आदमी के रूप में ही मानते हैं। हमारे लिए यह ईश्वर शक्ति की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है। सम्पूर्ण सृष्टि इस अभिव्यक्ति के अतिरिक्त और क्या है?

जो अभिव्यक्त है, वह स्थूल है। कार्य है, परिणाम है। इसके पीछे जो कारण है, वह सूक्ष्म है। अव्यक्त है। अत: अभिव्यक्ति किसी न किसी कारण की ही होती है। बिना अभिव्यक्ति के कारण दबकर रह जाता है। कई विचार मन में उठते हैं। हम उनको मूर्त रूप नहीं दे पाते और विचार विस्मृति में चले जाते हैं। सूक्ष्म को चर्म-चक्षुओं से देखा नहीं जा सकता। अत: अभिव्यक्ति भी आवश्यक जान पड़ती है। अभिव्यक्ति सूचना भी हो सकती है, जानकारी भी और चेतावनी के लिए भी हो सकती है। हमारे शरीर में मन-बुद्धि और आत्मा का निवास है। तीनों ही अदृश्य, अव्यक्त हैं। सूक्ष्म हैं। इन तीनों धरातलों की अभिव्यक्ति का एक ही माध्यम होता है, हमारा शरीर। शरीर स्वयं को भी अभिव्यक्त करता है। तब यह अभिव्यक्ति तंत्र कितना जटिल होगा। आज के संचार तंत्र से कम नहीं है। हमारे मन की अभिव्यक्ति के लिए तो समय और दूरी अर्थहीन है। पलक झपकने के साथ ही मन कहीं भी पहुंच सकता है। आंखों में सारा दृश्य समेट लेता है।

अभिव्यक्ति करने के दो धरातल होते हैं। एक-स्वयं से स्वयं की अभिव्यक्ति। दो-स्वयं को अन्य के सामने अभिव्यक्त करना। दोनों ही परिस्थितियों में कार्य सहज नहीं होता। अभ्यास भी चाहिए और निपुणता भी। चूंकि अभिव्यक्ति के लिए चार-चार धरातलों का उपयोग होता है, अत: जरा-सी असावधानी से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। आंख कुछ करना चाह रही है, मन कहीं और चला गया, तो आंख में शून्यता दिखाई पड़ेगी। इच्छा के विरुद्ध, दिखावे के लिए की जाने वाली प्रशंसा के क्षणों में यह दृश्य देखा जा सकता है। चेहरा प्रसन्न और आंखें शून्य। व्यक्ति जुड़ा हुआ दिखाई नहीं पड़ता। अभिव्यक्त होने या करने के लिए पूर्णता पहली आवश्यकता है। अभिव्यक्ति का अर्थ है व्यक्ति की ओर। और व्यक्ति को हम मनुष्य का पर्याय मानते हैं। क्यों? क्या सारी अभिव्यक्तियां मनुष्यपरक ही होती हैं?

प्रत्येक अभिव्यक्ति में मन की एक कामना अभिव्यक्त होती है। बुद्धि की गहनता एवं दिशा की अभिव्यक्ति होती है। व्यक्ति का स्वभाव अभिव्यक्त होता है। शरीर की आकृति-मुद्राएं भी अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं। शरीर की स्थिति-आधि-व्याधि भी अभिव्यक्ति कहलाती हैं। शरीर के आवेश-आवेग भी भावों की दिशा बताते हैं। मन का राग-द्वेष, अहंकार झलकता है इनमें। ममकार का भाव या श्रद्धा दिखाई पड़ती है। व्यक्ति के ज्ञान-अज्ञान का स्वरूप प्रकट होता है। और यह सारा होता है शरीर के माध्यम से, वाणी के माध्यम से। प्रश्न यह उठता है कि जब व्यक्त विषय को व्यक्ति कहा जा रहा है, तब व्यक्ति को मानव संज्ञा क्यों दी गई? क्यों प्रत्येक व्यक्त विषय को व्यक्ति नहीं कहा जा सकता?

क्योंकि अभिव्यक्ति केवल मनुष्य ही पूर्ण रूप से कर जीव केवल आवेश या आवेग को ही प्रकट कर सकते हैं। अन्य भाव व्यक्त ही नहीं हो पाते। वे प्रकृति के नियंत्रण में भोगपूर्ण जीवन यापन के लिए आते हैं। कर्म और कर्म-फल का चिन्तन वहां नहीं होता। कामना पर चिन्तन वहां संभव ही नहीं है। अभिव्यक्ति के लिए कामना का होना पहली आवश्यकता है। अन्य प्राणियों में कामना और क्रिया साथ ही चलती जान पड़ती है। हां, भयवश कोई कामना पूरी न हो सके, यह दूसरी बात है। मनुष्य कामना को समझ सकता है। उसका आकलन करके उसे स्वीकार कर सकता है। नकार सकता है। दबा भी सकता है। कामना का भाव प्रधान होना भी तो उतना ही आवश्यक है। बिना भावना के कामना का भी कोई महत्त्व नहीं होता। अभिव्यक्ति भावों की ही होती है। इस अभिव्यक्ति के लिए स्वीकारोक्ति केवल बुद्धि से ही मिल सकती है। अन्य प्राणी बुद्धि में तो तेज हो सकते हैं, किन्तु अपनी बुद्धि को सतोगुणी बना लेने की क्षमता उनमें नहीं है। बुद्धि तय करती है कि अभिव्यक्ति कैसी हो, कब हो, कब नहीं हो आदि। किस भाषा अथवा संकेतों का सहारा लिया जाए, या केवल मौन रहा जाए, यह निर्णय पशु-भाव का जीव नहीं कर सकता। भाषा का निर्माण भी नहीं कर सकता। ध्वनि का व्यवस्थित उपयोग भी नहीं कर पाता। तब अभिव्यक्ति पूर्ण कैसे होगी? उसने जो कर्म किया, उसका कौन क्या अर्थ लगाता है, इसकी भी चिन्ता उसे नहीं है। अभिव्यक्ति को कभी लक्षित तो कर ही नहीं सकता। अभिव्यक्ति का सामूहिक स्वरूप भी नहीं हो सकता।

आपातकाल में जरूर अपनी बिरादरी को इकट्ठा करने के लिए कुछ विशेष ध्वनियों का उपयोग कर लेता है।

मुद्दे की बात यह है कि मानव को ईश्वर ने अपना विशेष अंश प्रदान किया। स्वतंत्र शरीर, स्वतंत्र चिन्तन दिया ताकि वह नारायण धाम तक की यात्रा पूर्ण कर सके। अपने भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति कर सके। पर यह मानव व्यक्ति अर्थ में नहीं कहा। शास्त्रों का निर्वचन कुछ ऐसा हो गया कि व्यक्ति शब्द मानव का पर्याय बन गया। सृष्टि का पहला सत्य अव्यय रूप में हुआ। इसके पहले सृष्टि केवल ऋत् रूप में थी। कोई स्वरूप नहीं था। कोई सत्ता नहीं थी। जब प्रथम सत्ता बनी, अव्यय रूप में तो इसको 'पुरुष' कहा गया। अव्यय पुरुष सृष्टि का प्रथम निर्माण हुआ और इसी से सम्पूर्ण सृष्टि विकसित हुई। यहां पुरुष का अर्थ है पुर में रहने वाला। पुर अर्थात जिसका कोई केन्द्र है, परिधि है। यही अव्यय पुरुष आगे चलकर अक्षर पुरुष बनता है, क्षर पुरुष बनता है। षोडशी पुरुष बनता है। यहां पुरुष का अर्थ न मानव है, न व्यक्ति। केवल व्यक्त सत्ता मात्र है। इस सृष्टि में जो भी स्वरूप हमें दिखाई पड़ते हैं, सब पुरुष हैं। चाहे पशु-पक्षी, नर-मादा, पेड़-पौधे आदि सभी कुछ। शास्त्रकारों ने इस प्रथम व्यक्ति सत्ता को व्यक्ति कहकर पुरुष को मानव रूप से जोड़ दिया। जो सही नहीं हो सकता। इतना ही नहीं, उन्होंने तो स्त्री को पुरुष माना ही नहीं। पुरुष की अर्द्धांगिनी बनाकर रख दिया। दोनों ही पुरुष हैं, मूल में। दोनों ही व्यक्त सत्ता हैं ईश्वर की। इन्हें आप नर-नारी या मानव-मानवी कह सकते हैं। व्यक्ति तो हर व्यक्त सत्ता को ही मानना पड़ेगा। यह अलग बात है कि मानव अपनी शक्तियों के सहारे सिद्ध कर सकता है कि वह ईश्वर की ही व्यक्त सत्ता का रूप है। उसमें ईश्वर रूप प्रकट होने की क्षमता है। यह तो सृष्टि रूप की पूर्ण अभिव्यक्ति है। यहां व्यक्ति में ईश्वर भाव अभिव्यक्त हो जाता है।